“मिथिला में ज्ञान पद्धतियों की परम्पराएँ”

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा
के
सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) में
पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा
2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 बबिता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
इतिहास विभागाध्यक्ष
एम0 के0 एस0 कॉलेज,
त्रिमुहान चंदौना, दरभंगा
(अंगीभूत इकाई–ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा, बिहार)

गवेषिका

साक्षी
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु शोध परियोजना प्रारूप

1. शीर्षक :

मिथिला में ज्ञान पद्धतियों की परम्पराएँ

2. प्रस्तावना :

उत्तर में हिमालय की तराई और पश्चिम, पूरब एवं दक्षिण में क्रमशः गंडक, महानन्दा–कोसी तथा गंगा नदियों से परिवेष्टित भू–भाग में उत्तर वैदिक काल में आर्य उपनिवेशन विदेह जन के विदेह माधव और उनके पुरोहित गौतम रहुगण के नेतृत्व में हुआ और इस प्रकार विदेह राज्य का उदय हुआ, जिसकी राजधानी मिथिला थी। विदेह माधव के वंशज जनक कहलाते थे और जनक राजवंश का शासन लम्बे समय तक बना रहा। इसी जनक राजवंश के शासन काल में मिथिला नगर ज्ञान, एवं शिक्षा के उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में विकसित हुआ, जहाँ याज्ञवल्क्य ने बृहद शतपथ ब्राहमण और बृहदारण्यक उपनिषद की रचना कर जिस ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की की वह उसका प्रकाश पूरे – प्राचीन काल में सम्पूर्ण भारत में फैलता रहा।

याज्ञवल्क्य के नाम से जुड़ी याज्ञवल्क्य स्मृति धर्मशास्त्र के क्षेत्र में मनुस्मृति के बाद दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक मानी जाती है। नागरिक विधि संहिता के रूप में याज्ञवल्क्य स्मृति का प्रभाव आधुनिक काल में भी परिलक्षित किया जा सकता है। ज्ञान की जिस धर्मशास्त्रीय परम्परा का प्रारम्भ याज्ञवल्क्य ने किया, मिथिला में इसका विकास श्रीकर, भवदेव, लक्ष्मीघर, हलायुद्य, वीरेश्वर, ग्रहेश्वर, हरिनाथ, चंडेश्वर, विद्यापति, मिसरू मिश्र, वर्द्धमान द्वितीय, वाचस्पति द्वितीय आदि ने किया और इस परम्परा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक बनी रही।

मिथिला में सर्वाधिक समृद्ध ज्ञान पद्धति की परम्परा दर्शन की रही है। भारतीय षट दर्शन में दर्शन की दो शाखाओं न्याय एवं वैशेषिक का प्रवर्त्तन

क्रमशः गौतम और कणाद ने किया। न्याय दर्शन मुख्य रूप से तर्कशास्त्र एवं ज्ञान मीमांसा है, जो मनुष्य को अपने विचारों एवं सिद्धान्तों को परिष्कृत तथा सुस्थिर करने में सहायक होता है। वैशेषिक एक स्वतंत्र वैज्ञानिक भौतिकवादी दर्शन है। 12 वीं सदी में न्याय एवं वैशेषिक दर्शन के संयोग से दार्शनिक अध्ययन तथा चिन्तन के क्षेत्र में एक बौद्धिक क्रान्ति हुई जिसने न्याय दर्शन के आकर्षक पथ प्रशस्त किया।

मिथिला के इतिहास में पूर्व मध्यकाल का विशेष महत्व है, जब न्याय मीमांसा और धर्मशास्त्र का नवोन्मेष हुआ। 7वीं सदी में कुमारिल के उदय ने ज्ञानेद्रव के एक नवयुग का सूत्रपात किय। कुमारिल मूल रूप से मीमांसक थे, जिन्होंने जैमिनी के मीमांसा सूत्र और इसके शबर मास्य पर टीका लिखकर एक नए भट्ट मन का प्रतिपादन किया। मीमंसा के क्षेत्र में दूसरे नवीन मत के प्रवर्त्तन का श्रेय प्रभाकर मिश्र को दिया जाता है, जिसे गुरूमत कहा जाता है। प्रभाकर निमत ज्ञान में विश्वास करते है।

9वीं सदी के महान आचार्य वाचस्पति मिश्र का दर्शन की सभी शाखाओं पर एकाधिकार था। उन्होंने उद्योतकर की कृति न्याय वर्त्तिका की विद्वतापूर्ण व्याख्या की। शंकर भाष्य अथवा ब्रहमसूत्र पर उनकी महान टीका मामूली वेदान्त अध्ययन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखती है। वस्तुतः वाचस्पति सम्पूर्ण उत्तर भारत में वेदान्त के अधिकारिक विद्वान के रूप में प्रसिद्ध थे।

कुमारिल और प्रभाकर के बाद पार्थसारथि मिश्र एक ख्यातिलब्ध मीमांसक थे। इनके बाद मुरारी मिश्र ने मीमांसा दर्शन के एक अन्य मत का प्रतिपादन किया। मुरारी के बाद भी मिथिला में सदियों तक मीमांसा दर्शन की परम्परा बनी रही। 15वीं सदी में मिथिला की महारानी विश्वास देवी के दरबार में लगभग चौदह सौ मीमांसकों का विशाल सम्मेलन हुआ था।

पूर्व मध्यकाल में वाचस्पति के बाद सर्वाधिक प्रसिद्ध नैयायिक उदय हुए, जिन्होंने मिथिला में अन्तिम रूप से बौद्ध धर्म ज्ञान के प्रभाव को समाप्त कर दिया। न्यायकुसुमांजलि उदयन की शास्त्रीय कृति है, जो दृढ़तापूर्वक ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करती है। उन्होंने न्याय की एक नवीन पद्धति न्याय का शिलान्यास किया।

नव्य न्याय दर्शन को गंगेश ने व्यवस्थित किया, जिसे उनके शिष्य पुत्र वर्द्धमान ने आगे बढ़ाया। वर्द्धमान के बाद शंकर मिश्र, वाचस्पति द्वितीय, यज्ञपति, बटेश्वर, घटेशोपाध्याय, त्वंतोपाध्याय आदि ने नव्य न्याय दर्शन का चरमोत्कर्ष किया। मुगलकाल में मिथिला के खंडवाना कुल के वंशघरों भगीरथ ठाकुर, महेश ठाकुर, मधुसूदन ठाकुर आदि ने नव्य न्याय की परम्परा को जारी रखा तो आधुनिक काल में गोकुलनाथ उपाध्याय, गिरिघरोपाध्याय, रूपनाथ ठाकुर विश्वनाथ झा, बच्चा झा आदि ने नव्य न्याय पद्धति को आगे बढ़ाया और यह मिथिला की प्रमुख पहचान से जुड़ गया।

मध्यकाल में धर्मशास्त्रीय अध्ययन पद्धति का भी असाधारण विकास हुआ। चंडेश्वर मध्यकालीन मिथिला में धर्मशास्त्रीय अध्ययन के महान मनीषी थे। उन्होंने धर्मशास्त्र के आठ ग्रन्थों की रचनाकर राजनीतिक, धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन के कर्मों एवं विधियों का संहिताकरण किया। चंडेश्वर के बाद भी धर्मशास्त्रीय अध्ययन की परम्परा जाती रही।

मिथिला में ज्ञान पद्धतियों की परम्परा की समृद्धि एवं तिरन्तरता का मुख्य आधार जहाँ एक ओर ऐतिहासिक, भौतिक एवं अध्यात्मिक चुनौतियाँ थी, वहीं दूसरी ओर सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित शिक्षा की समृद्ध परम्परा की निरन्तरता भी थी। गुरू शिक्षा परम्परा में शिक्षा की अविरल धारा 19 वीं सदी तक प्रवाहित होती रही और मिथिला की ज्ञान पद्धतियाँ जीवन्त बनी रही।

मिथिला में लोक ज्ञान की भी एक अत्यन्त ही समृद्ध परम्परा रही है। वचन, दोहा, कथन, लोकोक्ति आदि के रूप में लोक ज्ञान परम्परा से ही मिथिला का लोकजीवन एवं व्यवहार निर्देशित होता रहा है। उदाहरणस्वरूप महान खगोलशास्त्री डाक के वचन सम्पूर्ण ग्रामीण कृषि प्रणाली एवं जनजीवन को निर्देशित करते रहे हैं। आज भी हमारे लोक उचित में वचनों, उक्तियों, दोषों आदि के प्रभाव को स्पष्टता के साथ परिलक्षित किया जा सकता है।

आधुनिक काल में पश्चिमीकरण, आधुनिक शिक्षा तथा विज्ञान के बढ़ते प्रभावों के कारण पारम्परिक ज्ञान पद्धतियों का क्षरण हो रहा है। अकादमिक क्षेत्र में इनका अध्ययन–अध्यापन तो हो रहा है, किन्तु व्यवहार में इनका उपयोग प्रायः क्षीण हो गया है, जबकि इनके प्रभाव की अनदेखी नहीं की जा सकती है। द्वन्द्वात्मक तर्क बुद्धि का ज्ञान के क्षेत्र में सदैव महत्व बना रहेगा, जिसका उद्भव न्याय दर्शन से हुआ है। अतः यह जरूरी है कि मिथिला की ज्ञान पद्धतियों की गवेषणा के माध्यम से इसकी प्रासंगिकता की पड़ताल की जाय। जाहिर है कि प्रस्तावित शोध विषय समीचीन ही नहीं अपितु अपने ज्ञान की जड़ों की तलाश के लिए जरूरी भी है।

2. पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :

मिथिला की ज्ञान पद्धतियों पर अबतक स्वतंत्र एवं समग्र अध्ययन नहीं किया जा सका है। या तो ज्ञान की अलग–अलग पद्धति पर अबतक अध्ययन हुए हैं या फिर मिथिला के इतिहास अध्ययन में एक अध्ययन में इन्हें समेट दिया गया है। फिर जो अध्ययन हुए भी हैं, उनमें ऐतिहासिक तत्व को प्रायः नजर अन्दाज कर दिया गया है। उदाहरण स्वरूप ज्ञान पद्धति के विकास में आर्य उपनिवेशीकरण, जैन एवं बौद्ध धर्म की चुनौतियों, पूर्व मध्यकालीन संक्रमण, इस्लामी धर्म दर्शन के प्रत्याचुर आदि का विश्लेषण अब तक प्राय नहीं हुआ है। ज्ञान पद्धतियों की जानकारी के लिहाज से उपेन्द्र ठाकुर की पुस्तक **हिस्ट्री ऑफ**

मिथिला, राधाकृष्ण चौधरी की **मिथिला इन द' राज आफ विद्यापति**, उपेन्द्र ठाकुर की दूसरी पुस्तक **जैनिज्म एंड बुद्धिज्म इन मिथिला**, पी0 वी0 काले की **हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र**, सुरेश्वर झा की **पालिटिकल थिंकर्स आफ मिथला, कम्प्रेहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार** की सभी जिल्दें आदि पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं। स्पष्ट है कि प्रस्तावित अध्ययन शोध का एक मौलिक विषय है।

4. उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता :

प्रस्तावित शोध उद्देश्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मिथिला की ज्ञान पद्धतियों की परम्पराओं का समग्र एवं स्वतंत्र अध्ययन करना है। मिथिला में ज्ञान की समुन्नत परम्परा रही है और इनका प्रभाव भले ही क्षीण हुआ हो, किन्तु महत्व आज भी बना हुआ है। ज्ञान परम्पराएँ मिथिला की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है। जाहिर है कि ज्ञान पद्धतियों के अध्ययन के माध्यम से मिथिला संस्कृति की बेहतर समझ पैदा हो सकती है और इस प्रकार प्रस्तावित अध्ययन का प्रासंगिक महत्व है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

चूंकि अबतक इतिहास अनुशासन के अन्तर्गत प्रस्तावित शोध विषय पर समग्रता में समेकित अध्ययन नहीं किया जा सका है, अतः मिथिला संस्कृति के एक प्रमुख घटक के रूप में ज्ञान पद्धतियों के अध्ययन से ज्ञान के क्षेत्र में अभिवृद्धि होगी और ऐतिहासिक संदर्भ में परिप्रेक्ष्य में अध्ययन से नए तथ्यों एवं आंकड़ों के उद्घाटन की प्रथम संभावना भी है।

6. अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र मिथिला की ज्ञान पद्धतियों पर केन्द्रित मिथिला का सम्पूर्ण इतिहास होगा।

7. अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत शोध परियोजना को एतिहासिक आलोचनात्मक पद्धति का अवलम्बन कर पूरा किया जायेगा।

8. शोध सामग्री की उपलब्धता:

प्रस्तावित शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिए पर्याप्त शोध सामग्री उपलब्ध है। कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा कल्याणी फांउडेशन पुस्तकालय, दरभंगा, लक्ष्मीश्वर सिंह सार्वजनिक पुस्तकालय, दरभंगा आदि के अलावे देश के प्रमुख संस्कृत अध्ययन संस्थानों में शोध सामग्री यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध हैं। जाहिर है शोध सामग्री की कमी नहीं है।

9. शोध संकल्पना:

प्रस्तावित अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि भारतीय ज्ञान पद्धतियों की परम्पराओं में मिथिला का अप्रतिम योगदान है, जिसकी निरन्तरता आधुनिक काल तक बनी रही है।

10. कार्य योजना :

प्रस्तुत शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायेगा–

प्रस्तावना

अध्याय–1 : मिथिला की ज्ञान पद्धतियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्याय–2 : प्राचीन मिथिला की ज्ञान पद्धतियाँ

अध्याय–3 : पूर्व मध्यकालीन मिथिला की ज्ञान पद्धतियाँ

अध्याय–4 : आधुनिक काल में मिथिला की ज्ञान पद्धतियाँ की विरासत

अध्याय–5 : मिथिला लाकज्ञान में लोकज्ञान की परम्परा

अध्याय–6 : मिथिला की ज्ञान पद्धतियों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता

निष्कर्ष

11. स्रोत ग्रंथ सूची :

प्राथमिक स्रोत

1. जैमिनी कृत मीमांसा दर्शन
2. गंगेश उपाध्याय कृत नव्य न्याय
3. उद्योतकर कृत न्याय वार्तिक
4. गौतम कृत न्याय सूत्र
5. ज्योतिरीश्वर कृत वर्ण रत्नाकर
6. महिदास एतेरय कृत ऐतरेय ब्राह्मण
7. वृहद विष्णु पुराण
8. ब्रह्मपुराण
9. शथपथ ब्राह्मण
10. महापरिनिर्वण सुत्त
11. वृहदारण्यक उपनिषद
12. महावग्ग
13. याज्ञवल्क्य स्मृति
14. जातक
15. स्कंद पुराण
16. मझिम निकाय
17. वाल्मीकि रामायण
18. जैन पुरान
19. महाभारत
20. भागवत पुराण
21. विष्णु पुराण

द्वितीयक स्रोत

22. चौधरी, आर. के., 1976, विद्यापति के काल में मिथिला, वाराणसी

23. Diwakar, R.R., 1988, Bihar Through The Ages.

24. Comprehensive History of Bihar, Vol. I, II & III, Patna.

25. झा, सुरेश्वर, 2005, मिथिला के राजनैतिक चिंतक, दरभंगा

26. B. Bhattacharya, 1964, Studies in Dharmashastra, Kolkata.

27. भट्टाचार्या, डी. सी., 1958, मिथिला में नव्य न्याय का इतिहास, कोलकाता

28 गँगुली, जे., 1966, मिथिला में धर्मशास्त्र, कोलकाता

29. जयसवाल, के. पी. 1930, मनु एवं याज्ञवल्क्य, कोलकाता

30. ठाकुर, उपेन्द्र,1956, मिथिला का इतिहास, दरभंगा

31. .... 1964, History of Buddhism and Jainism in Mithila, Varansai.

32. गिरी, ए. पी., 2018,रस गंगाधर एवं नव्य–न्याय भाषा प्रविधि, दिल्ली

शोध पर्यवेक्षक

गवेषिका

डॉ0 बबिता कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
इतिहास विभागाध्यक्ष
एम0 के0 एस0 कॉलेज,
त्रिमुहान चंदौना, दरभंगा
(अंगीभूत इकाई–ल0 ना0 मि0 वि0वि0, दरभंगा, बिहार)

साक्षी
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा